अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता वर्ष पर विशेष

एक दिन में हम कुल कितनी कुदरती चीज़ों का इस्तेमाल करते होंगे? एक दिन मैंने सोचा चलो इनको गिना जाए!

दुनिया के रंग हज़ार

आमोद कारखानिस

मैं अल सुबह उठ जाता हूँ। उठते ही दाँत माँजता हूँ। जो दन्त मंजन मैं इस्तेमाल करता हूँ उसमें हरड़, बहेड़ा, लौंग, मुलेठी जैसी कई चीज़ें मिली होती हैं। ये सब हमें पेड़ों से मिलती हैं। कहते हैं इनसे मेरे मसूड़े मज़बूत होंगे। लोग तो नीम की दातून भी इस्तेमाल करते हैं। दातून वही काम करती है जो ब्रुश करता है।

मुँह पे छींटे मारे और तौलिए से पोंछा। अब यह जो तौलिया है उसके रेशे हमें कपास के पौधे से मिलते हैं। हाथ तौलिए को टाँगने बढ़ रहे हैं और मन कह रहा है अब चाय हो जाए! चाय भी तो दार्जिलिंग के एक पौधे की पत्तियाँ ही हैं। और उसमें जो दूध पड़ा है उसे किसी गाय ने घास चरके ही तो दिया होगा!

चाय की चुस्कियों के बीच-बीच में जो बिस्कुट मैं कुर्र-कुर्र करके खाए जा रहा हूँ उनके बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? सही सोचा, गेहूँ, शक्कर वगैरह से मिलकर बना है यह। गेहूँ एक किस्म की घास के दाने हैं और शक्कर तो तुम जानते ही हो गन्ने से बनती है।

उस दिन की सुबह ज़रा सर्दीली थी। मन किया कि स्वेटर पहन लूँ। फिर ख्याल आया स्वेटर भी तो भेड़ों की ऊन से बना है।

थोड़ी ही देर में मुझे ऑफिस के लिए तैयार होना है। ऑफिस की फाइलें आदि रखने के लिए मेरे पास चमड़े का बैग है। फाइलों-कॉपियों का कागज़ बाँस की लुगदी से बना है। और बैग की जेब में रखी पेंसिल का खोल लकड़ी का है। लकड़ी यानी पेड़। बात यहीं खत्म नहीं होती।

यह सूची अभी बाकी है। पर पहले मैं अपने बैग में टिफिन रख लूँ। टिफिन को देखकर यह मत सोचना कि इसमें क्या कुदरती है। इसे खोलो तो – सब्ज़ी-रोटी और अमरूद। तीनों ही तो पेड़-पौधों से मिले हैं हमें।

अमरूद मेरा पसन्दीदा फल है। अब देखें फल कैसे बनते हैं? पेड़ों में फूल लगते हैं। अगर उनके परागण में कीट मदद न करें तो कहाँ से मिलेंगे फल? पर जनाब, कीट हमेशा ही मददगार नहीं होते। कुछ कीट और इल्लियाँ पत्तियाँ खाते हैं। इससे पौधे पनप नहीं पाते हैं। यही कीट कुछ पक्षियों का भोजन बनते हैं। इससे कीटों की संख्या नियंत्रित रहती है।

है न दिलचस्प बात! ....दिलचस्प यूँ कि अगर मुझे फल खाने हैं तो कीटों से फूलों का परागण ज़रूरी है। कीट परागण में मदद करते हैं। पर, वे बेतहाशा न बढ़ें इसके लिए पक्षी हैं जो उनकी संख्या नियंत्रित रखते हैं। कुछ घासें भी इसी मिज़ाज की होती हैं। अगर उन पर नियंत्रण न हो तो वे चारों तरफ ऐसी फैल जाएँ कि किसी दूसरे पौधे के लिए जगह ही न बचने दें। पर, शुक्र है कि हिरण जैसे चराकू जीव हैं जो घास खाते हैं। फिर हिरण जैसे जानवरों की संख्या पर नियंत्रण के लिए शेर आदि जीव हैं। कुदरत का ताना-बाना बहुत दिलचस्प है। ऐसी कई खाद्य श्रृंखलाएँ हैं। कई शिकारी हैं और कई शिकार हैं। जैवविविधता के सिलसिले में इस बार चकमक के अलग-अलग पन्नों पर तुम्हें इसकी झलकियाँ मिलेंगी।

मेरा एक दिन कितने पेड़-पौधों, जीवों की मदद से पूरा होता है। हरड़, बहेड़ा, लौंग से शुरू होकर फल, कीटों तक। आपसी लेन-देन के इस ताने-बाने की यह तो सिर्फ एक झलक है। हम इन हज़ारों चीज़ों पर निर्भर हैं। हम सब एक साथ रह सकें इसलिए जीवों की यह विविधता बहुत ज़रूरी है।

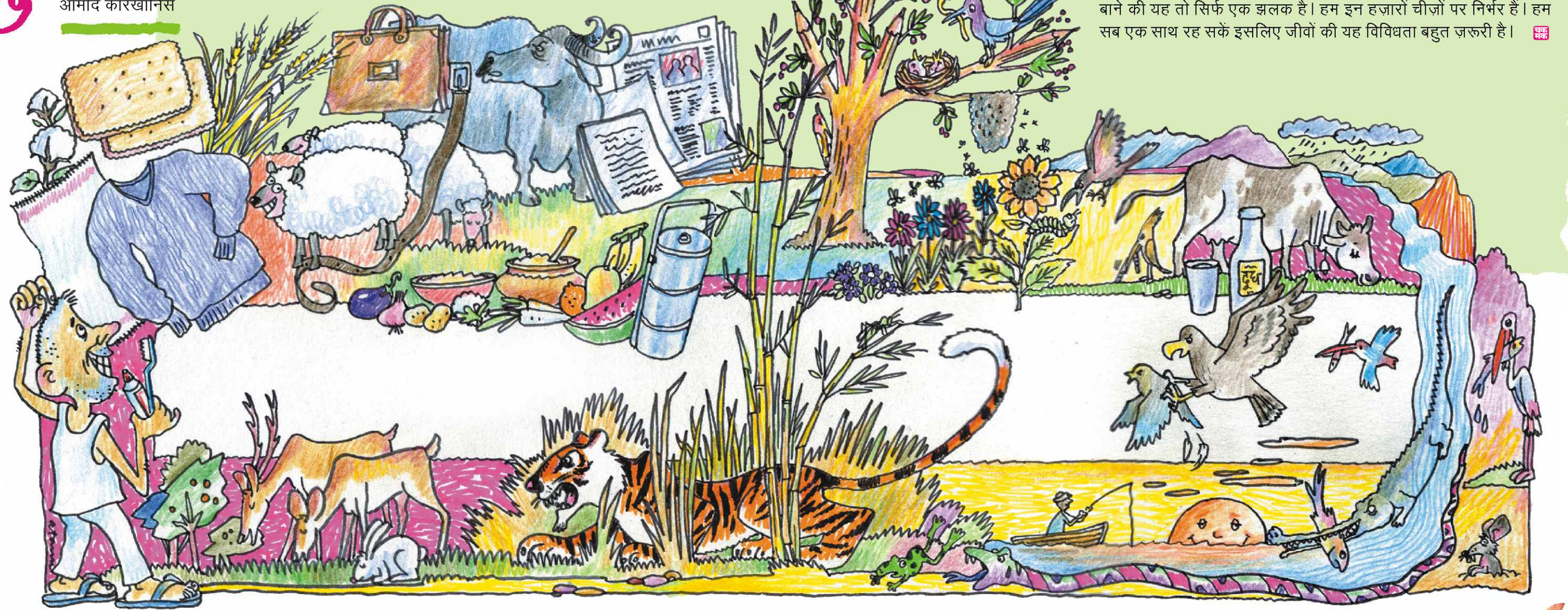

चित्र : अतनुरॉय